International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मारवाड़ के जैतावत राठौड : एक अध्ययन

सज्जन सिंह राठौड, शोध विद्यार्थी,
इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया वि"वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

भारतवष के पि"चम दि"ाा में स्थित प्रदे"ा जो राजपूताना,रायथान या राजस्थान के नाम प्रसिद्ध है। राजस्थान के दक्षिण–पि"चम में स्थित भू–भाग मारवाड़ के नाम से विख्यात है। भारतीय इतिहास में मारवाड़ क्षेत्र को 'मरू–प्रदे"ा' के रूप में जाना जाता है। प्राचीन काल के वैदिक साहित्य में ऋग्वेद नामक ग्रंथ में मारवाड़ काल के वैदिक साहित्य के अतिरिक्त प्राचीन काल के महाकाव्यों, संस्कृत ि"ालालेखों, पुस्तकों में भी 'मरू', 'मरूस्थल', 'मरूस्थली', मरूमण्डल', मरूप्रदे"ा' और मरूकांतार आदि शब्दों का उल्लेख किया गया है। जिसका अर्थ रेगिस्तान एवं जलहीन दे"ा होताहै। कालान्तर में यहीं प्रदे"ा मरूस्थल, मरूवाड़ और अततः में मारवाड़ के नाम से सम्बोधित किया गया है। मारवाड़ राज्य राजस्थान के पि"चमी हिस्सा है। जिसके केन्द्र में जोधपुर अवस्थित है।[1]मारवाड़ प्रदे"ा राजपूताना के दक्षिण–पि"चम में $24^0 22'$ उतरी अंक्षा"ा से $27^0 42'$ उ. अंक्षा"ा तथा $70^0 5'$ से $70^0 22'$ पूर्वी दे"ाान्तर के मध्य फैला हुआ है। ब्रिटि"ा काल में मारवाड़ प्रदे"ा की लम्बाई ई"ाानकोण से नैऋत्यकोण तक 320 मील तथा चौडाई उतर से दक्षिण तक 170 मील थी। इसका क्षेत्रफल 35016 वर्गमील था। मारवाड़ क्षेत्र के अर्न्तगत जोधपुर, पाली, जैसलमेर, बीकानेर, बाडमेर, सिरोही, जालोर आदि जिले आते है।[2]

मारवाड़ में राठौड भाासको का प्रारम्भिक इतिहास :

मारवाड़ क्षेत्र में 13वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कन्नौज से राव सीहां राठौड के आगमन के साथ इतिहास में एक नया युग का आरंभ हुआ, यह युग राठौड़ो का युग था। जिसने लगभग 700 वर्षो तक राठौडो के पराक्रम, त्याग, न्याय और योग्यता का परिचय दिया।[3]

मारवाड़ के राठौड व"ा का मूल पुरूष राव सीहा राठौड़ था। राव सीहां (1240–1273) का आगमन मारवाड़में 13वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में माना जाता है। राठौड सेतराम के पुत्र राव

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सीहा के सम्बन्ध में विद्वानों ने अलग–अलग मत दिए है। मुहणोत नैणसी, कर्नल जेम्स टॉड, दयालदास, डॉ. माथुर आदि इतिहासकारों ने राव सीहा राठौड को कन्नौज से आना बताया है। जोधपुर राज्य की ख्यात, पृथ्वीराज रासो में भी राव सीहा राठौड का सम्बन्ध कन्नौज से बताया गया है जबकि डॉ. हार्नली और डॉ. गौरी शंकर ओझा ने राव सींहा को बदायूं राजव"ा से सम्बन्धित बताया है।[4]

''राठौड़ो की ख्यात'' से पता चलता है कि जब राव सिंहाजी कन्नौज से पुष्कर तीर्थ–यात्रा के लिए गए तो भीनमाल के ब्राह्मणों ने उनके पास उपस्थित होकर मुल्तान के बाद"ाह के आंतक से बचाने के लिए सहायता मांगो। राव सिंहाजी ने मुसलमानों को दण्ड देकर भीनमाल के ब्राह्मणों को राहत पहुंचाई। तत्प"चात् यात्रा कर जब सिंहा जी लौट रहे थे, तो पाली के पालीवाल ब्राह्मण जसोधर ने उपस्थित होकर बालेचा चौहानों के कष्टों से विमुक्त होने की याचना की इस पर राव सीहा ने बलेचा चौहानों का दमन कर पल्लीवाल ब्राह्ममाणों को राहत पहुंचाई। वह स्वयं तो कन्नौज चल गए, परन्तु अपने पुत्रों को पाली में रखा।[5]

राव सिंहा के मृत्यु स्मारक लेख 'देवल अभिलेख' बीठू ग्राम, पाली में मिला है। जिसके अनुसार राव सिंहा, सेताराम का पुत्र था। उसकी मृत्यु वि.सं 1330 कार्तिक वदि 12 (9 अक्टुबर 1273 ई. सोमवार) को हुई थी। राव सीहा जी राठौड ने पाली के आसपास राठौड राजव"ा की स्थापना की थी। राव सिंहा जी की मृत्यु 1273 ई. में तब हुई जब वह मुसलमानों के विरूद्ध पाली प्रदे"ा की रक्षा कर रह थ। सीहा तथा पालीवाल ब्राह्मणों व मुस्लिम आंक्राताओं के मध्य लड़े गए इस युद्ध में 1 लाख स्त्री–पुरूष मारे गए या घायल हुए, जिस कारण स इस युद्ध को मारवाड़ के इतिहास में ''लाख झंवर'' का युद्ध कहा जाता है। इस मृत्यु–स्मारक लेख में राव सीहा की रानी पार्वती सोंलकी का तथा उसके तीन पुत्र आस्थान, सोनग, अज का भी उल्लेख मिलता है।[6]

राव सीहाजीमारवाड़ के राठौड व"ा के संस्थापक थे। राव सिहा के प"चात् क्रमानुसार राव आस्थान, राव धूहडजी, राव रामपालजी, राव कनपालजी, राव जालणसीजी,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राव छाडाजी, राव तीडाजी, राव कन्हडदेवजी, राव त्रिभुवनसिंह जी, राव सलखाजी, राव वीरमजी, राव चूंडाजी, राव कान्हा, राव सत्ता जी, राव रणमल जीमारवाड़ के शासक हुए थे।[7]

राठौडो की जैतावत भाखा का प्रादुर्भाव

राव सीहा जी के वं"ाजों में राव रणमल राठौड एक महान योद्धा एव ंप्रतापी शासक हुए, जिनका गौरव मारवाड़, मेवाड, गुजरात, मालवा और आगरा तक फैला हुआ था। राव रणमल के 24 पुत्र हुए थे, जिसमें से राव अखेराज, जौधा, कांधल एवं चांपा ने अनेक युद्धों में शौर्य एवं बहादुरी का परिचय देकर राठौड़ो के इतिहास को गरिमामय एवं गौरवपूर्ण बनाया। राव रणमल ने अपने जीवनकाल में ही अपन छोटे पुत्र राव जोधा को मारवाड़ राज्य का उत्तराधिकारो घोषित कर, अपने बडे पुत्र अखेराज को अपने हक का मारवाड़ राज्य त्याग करने की इच्छा व्यक्त की।[8] राव अखेराज जी ने अपने पिता की आज्ञा को ि"ारोधार्य मानते हुए तथा उनके वचनो का मान रखते हुए, अपने हक का मारवाड़ राज्य त्याग कर तुरन्त प्रभाव से राव अखेराज ने अपने अंगूठे को तलावर से चिरकर टपकते रूधिर से सर्वप्रथम अपने अनुज राव जोधा का राजतिलक किया तथा मारवाड़ राज्य का उतराधिकार घोषित किया। राव जोध ने भी अपने ज्येष्ठ भाई के त्याग का मान–सम्मान करते हुए, मारवाड़ का बगड़ी ठिकाना राव अखेराज को देना का वचन दिया। राव जोधा ने जहां जोधपुर राज्य की स्थापना की वहीं अखेराजने त्याग की भावना से पृथक बगड़ी ठिकाने की स्थापना की।अखेराज के पात्र एवं प्रतापी पंचायण के सुयोग्य आत्मज वीर ि"ारोमणि राव जैताजी से राठौडो की जैतावत शाखा का प्रादुर्भाव हुआ है। मारवाड़ का बगड़ी ठिकाना जैतावत राठौडों का पाटवी ठिकाना है।[9]

जैतावतराठौडो के प्रमुख ठिकाने

जैतावत राठौड़ो के पट्टे के गांवो की सूचनाएं जोधपुर राज्य की पट्टा–बहिया से तथा उनके द्वारा जो गांव बसाये गए वह जानकारी राज्य की सनद बहियो से ज्ञात होती है। पट्टा बहियो में अलग–अलग ठिकानों का पट्टा जारी करते समय उनकी रेख के अनुसार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उनकी चाकरी करने के रूप में एक निि"चत राि"ा राज्य में जमा करवानी पड़ती थी। यह राि"ा उतराधिकारी शुल्क के रूप में ली जाती थी, जो हकुमनामा एंव नजराना के नाम से जानी जाती थी। अतः जैतावत राठौडो को मिले पटटों कें गांवो के तथ्यात्मक जानकारी इन पुरालेखीय सामग्री के आधार पर दी गई है। मारवाड़ राज्य द्वारा जैतावत राठौडो को मिले पट्टे के ठिकानो का वर्णन किया जा रहा है।

1. बगड़ी
2. खाखरा
3. थावंला
4. नून
5. वाली
6. सारंगवास
7. ढुण्ढा–लाम्बोड़ी

बगड़ी ठिकाना–

बगडो ठिकाना जैतावत राठौडो का प्रथम श्रेणी का ठिकाना है। यह ठिकाना मारवाड़ के सोजत परगने के अर्न्तगत आता है, जो पाली से 62 किलोमीटर तथा जोधपुर से 108 कि.मी की दूरी पर स्थित है।[10] जोधपुर के संस्थापक राव जोधा के अग्रज अखेराजजी त्याग की भावना से इस ठिकाने का बसाया था। अखेराज जी के पौत्र जैताजी राठौड की जैतावत शाखा का उद्‌भव हुआ है। बगड़ी ठिकाना जैताजी की वतन जागीर था। अखेराज जी ने अपने छोटे भाई जोधा का राजतिलक कर जोधपुर का शासक बनाया था तथा स्वयं ने अपने हक का राज्य त्याग कर पृथक बगड़ी ठिकाने की स्थापना की थी।[11]

टीकायत ठिकाना, बगड़ी–

राव अखेराज जी अपने पिता की आज्ञा को ि"ारोधार्य मानते हुए अपने हक का राज्य त्यागकर अपने छोटे भाई राव जोधा को मारवाड़ राज्य का शासक घोषित कर तुरन्त

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रभाव से अपने अंगुठे को तलवार से चीरकर टपकते लहु से अपने छोटे भाई राव जोधा का राजतिलक किया, उसके प"चात् मारवाड़ में यह परम्परा बन गई की जोधपुर के महाराजा का राजतिलक बगड़ी ठाकुर क द्वारा ही किया जायेगा, और वर्तमान में भी इस राजतिलक की स्वच्छ परम्परा का पालन किया जाता है। जिस कारण मारवाड़ के बगड़ी ठिकाने को टीकायत ठिकाने का दर्जा प्राप्त है।[12]बगड़ी के जैतावत ठाकुर मरुधरा के टीकायत कहलाये आर तब बगड़ी का महत्व भी बढ़ गया। इसके बारे में दुरसा आढा द्वारा रचित एक दोहा प्रसिद्ध है।[13]

लेख लोलाड़ा लिख दिया राता लोहिया राज,

बगड़ी थू ही बनावसी मरूधर रो महाराज।।

मारवाड़ के बगड़ी ठिकाने को हाथ की कुरब, दोवडी ताजीम, सिरामतो के साथ दरबार में बैठने की कुरब, मातपो"ाी की कुरब प्राप्त है।[14]राव जोधा जब जोधपुर के शासक बने तब उनके 26 भाई और 20 पुत्र थे। उन्होने मारवाड़ के राजदरबार में भाइयों को दाहिनी तरफ बैठाया जिसे जीमणी मिसल तथा पुत्रों को बायो तरफ बैठाया जिसे डावीमिसल कहा गया। राव जोधाजी से लेकर मोटा राजा उदयसिंह तक सं 1595 तक यही क्रम चला, इसमे किसी ठिकाने वि"ोष का नाम नहीं दिया गया। मारवाड़ के शासक सूरसिंह जी के समय (1595–1616 ई.) सर्वप्रथम मारवाड़ में मिसल FIRST, Class NOBLES का गठन किया गया था। इस मिसल में प्रथम श्रेणी के सरदारों को जीमणी व डावी मिसल में सम्मिलित किया गया। जिनका संख्या 8 थी। बगड़ी, आऊवा, असोप, कानाना (राव जोधाजी के भाईयों के ठिकाने) कोजीमणी मिसल तथा रीयां रायपुर, खैरवा, खीवसंर, (राव जोधाजी के पुत्रों के ठिकाने डावीमिसल में गठन किया) इन आठो मिसलो से सम्बन्धित एक दोहा प्रचलित है कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक एनल्स एण्ड एवटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान में इसका उल्लेख किया है –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रीयां रायपुर आऊवा आसोपा,

बगड़ी खेरवा खीवसर कानाना।

अै आठूं है ''मीसला'' अनूप।।[15]

ठिकाना खोखरा–राव जैताजी के व"ाजो में भगवानदास और उसके व"ाजो के अधिकार में तीन–चार पीढियों तक बगड़ी का ठिकाना रहा, परन्तु यहा पर स्थायी रूप से अपना स्वामीत्व स्थापित नहीं कर सके और खोखरा के ठिकानेदारो के रूप में अपनी पृथक पहचान बनाई। जोधपुर महाराजा की और से सर्वप्रथम खोखरा गाव कल्यादास को मिला।[16] वि.स. 1663 में जोधपुर महाराजा की ओर से भगवानदास को खोखरा की जागीर प्रदान की गई। महाराजा जसवंत सिंह की पट्टाबही के अनुसार आनन्द सिंह को वि.स. 1718 वै"ाख वदी 13 को खोखरा ठिकाने के आठ गांव मिले जिनकी रेख 9050 रु. की थी। आनन्द सिंह के प"चात् उनके बेटे अनोप सिंह जैतावत को रामसिंह सबल सिहोत कूम्पावत से तागीर कर प्रदान किया तथा 2500 रु की पे"ाक"ा नि"चित की गई। वि.स. 1691 में खोखरा ठिकाना उदयभाण सिंह जैतावत को दिया गया। महाराजा विजयसिंह की ओर से वि.स. 1820 को 15000 रु. रेख का पट्टा रत्न सिंह जैतावत के नाम लिखा गया। वि.स. 1832 चेत्र सुदि 14 को रत्न सिंह के पुत्र जोध सिंह को खोखरा समेत 6 गांवों के पट्टे 13000 रु. रेख में दिए गए। हुक्मनामा के 8242 रु. 4 आने नि"चित किए गए। इसमें 8001 रु. 'असल' और 241 रु. 4 आने 'तीडोत' कबूलायत के थे। खोखरा ठिकाने को हाथ की कुरब, दोवडी ताजीम, मातपो"ाी की कुरब प्राप्त थी।[18]

ठिकाना वाली (बाली) – वाली ठिकानामारवाड़ के सोजत परगने के अर्न्तगत आता है। राव जैताजी के व"ा भगवानदास के पौत्र एवं उदयभाण के पुत्र प्रतापसिंह को वाली गांव 1000 रु. रेख में प्राप्त हुआ था। मारवाड़ मुगल संघर्ष के समय में महाराजा अजीतसिंह कि सेवा में रहते हुए प्रतापसिंह जी ने स्वामी भक्ति का परिचय दिया। 1707 ई. में महाराजा अजीत सिंह जी जोधपुर की राजगद्दी पर विराजमान हुए, तब प्रतापसिंह को 5000 रु. रेख के गांव प्रदान किए। वि.स 1765 में प्रतापसिंह को वाली गांव प्राप्त हुआ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इसके अतिरिक्त सारंगवास गांव (रेख 4000रु.) ि"ावदान राठौड से तागीर कर दिया और पे"ाक"ाी के 201 रुपये नि"चत किये गये।[19] प्रतापसिंह के बाद जुंजारसिंह, हठीसिंह, सेरसिंह, स्वरूपसिंह वनेसिंह, वभूतसिंह भारत सिंह, उतराधिकारी हुए। वि.स. 1941 में भारतसिंह वाली की गद्दी पर बैठ। उसे मार्ग"ाीर्ष सुदि 12 को पट्टा दिया गया। वि.स. 1941 में खरीफ की फसल से अधिकार देने का आदे"ा हुआ। पट्टे में वि"ोष रूप से आव"यक निर्दे"ा दिए गए थे कि राज्य की आज्ञाके बिना सांसण व डोली के रूप में किसी को भूमि प्रदान नहों कि जाए। हुक्मनामा 750 रु. नि"चत किया गया। इस पट्टे में सरप्रताप के हस्ताक्षर है।[20]

ठिकाना सारंगवास – सारगवास गांव मारवाड़ के सोजत परगने के जैतावत राठौड़ो के पट्टे में रहा। वि.स. 1679 में यह गांव जैताजी राठौड के व"ाज कूंभकरण के पुत्र साहबखान को मिला।[21]इस गांव का नाम सारंगपुर भी मिलता है। वि.स. 1714 ज्येष्ठ सुदि 8 को जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह के समम यह गांव भगवानदास के पौत्र उदेभाण के पुत्र सादुल को प्राप्त हुआ था। उस समय इसकी रेख 1000 रु. नि"चत की गई भी। वि. स. 1726 में पट्टा खालसा कर दिया गया। महाराजा अजोत सिंह के समय वि.स. 1765 को सादुल के अनुज प्रतापसिह जैतावत के नाम सारगवांस गांव का पट्टा किया गया। इसकी रेख उस समय 4000 रु. आंकी गई।[23] जोधपुर महाराजा अभयसिंह के शासनकाल में वि.स. 1790 में मानसिंह के पुत्र बखतसिंह को रेख 4000 रु. में सारंगवास गांव का पट्टा दिया गया, तब से इस गांव ने ठिकाना का स्वरूप लिया था।[24] वि.स. 1808 में बख्त के पुत्र अजब सिंह, वि.स. 1818 में संग्राम सिंह के पुत्र गुमानसिंह जैतावत, 1820 में अजब सिंह कूपांवत, वि.स. 1820 में तेज सिंह जैतावत के नाम सारगंवास का पट्टा लिखा गया।[25] अजब सिंह के बेटे मोहकम सिंह को वि.स. 1837 में पट्टा दिया गया। हुक्मनामा बही से ज्ञात होता है कि उसने 1837 वि.स. श्रावण मास में 201 रु. और भाद्रपद मास में 190 रु. राजकोष में जमा कराये थे।[26] मोहकम सिंह के व"ाक्रम में दौलत सिंह अनाड सिंह, खुमाण सिंह हेमसिंह गोरधन सिंह हुए।[27]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ठि. ढूण्ढा लाम्बोडी, सोजत परगना, पाली—ढूण्ढा लाम्बोडी गांव जैताजी राठौड़ो के ठिकानेबगड़ी (जैतावत राठौड़ो का मुख्य ठिकाना) से केवल 7.4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह गांव जोधपर से 115 कि.मी. एवं पालो से 69 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है।[28] प्रारम्भ में ढूण्ढा लाम्बोडी गांव जैताजी राठौड के व"ाज कूंभकरण जैतावत के व"ाक्रम में अनोपसिंह को मिला, तत्प"चात् उनके पुत्र उदयसिंह को (1766—1767) के पट्टे में रहा था।[29]

वि.स. 1767 में महाराजा अजीत सिंह के काल में नाथा के पुत्र ि"ावदान के नाम सोजत परगने के दो गांव ढूंढा (रेख 1500रु.) और लांबोडी (रेख 1000रु) के पट्टे लिखे थे। पे"ाक"ाी 401 रु. नि"चत की गई थी। वि.स. 1768 में दोनों गांव तागीर कर भाव सिंह जैतावत के पुत्र दौलत सिंह जैतावत के नाम लिखे गए।[30] इस प्रकार यह गांव प्रारम्भ में व"ाानुगत जागीर में नहीं रहा। वि.स. 1853 ई. लाम्बाडी और सावलदास का गुडा (राम सिंह गुडा) भाखरसिंह रामसिहोत को मिला।[31] भाखरसिंह जैतावत के बाद उनके पुत्र जालम सिंह को ढूण्ढा लाम्बोडी गांव प्राप्त हुआ था। जालसिंह जैतावत के व"ाक्रम गेनसिंह, भोमसिंह हुए। भोमसिंह जैतावत के ज्येष्ठ पुत्र देवीसिंह के देवयोनि में जाने पर (पितर हुए) भोमसिंह के प"चात् देवीसिंह (पितर हुए) के अनुज विजेसिह के ज्येष्ठ पुत्र तेजसिंह को वि.स. 1994 में ढूण्ढा गांव 2000 रु. रेख पट्टे में प्राप्त हुआ। इसकी सनद सोजत की कचेडी में वि.स. 1997 मार्ग"ाीर्ष वदि 6 को की गई। पट्टे की प्रतिलिपी इस प्रकार है—[32]

2000/ पट्टो खास दसकतां रो सं 1994 रा जेठ वद 4 रो तथा राठौड तेजसिंह देवीसिंघ भोमसिघोत खांप जैतावत सू मेहरवान होय न पट्टो इनायत कियो है सो स. 1991 री साख सांवणूथा अमल देजो गांव में बिना हुक्म सांसण डोहली देण न पावे दांणजमेंबंधी वगेरेबाब दरवारा रा है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2000/ परगदना रो गांव ढूढा लम्बोडी तागीर

रा. भोमसिंह ग्यानसिंघोत खांप जैतावरा री।[33]

रेख दोम हजारी री

सनद सोजत कचेडी उपर सं. 1997 रा मीगसर वद 6 त्थां 7 री।

निश्कर्श—राठौड़ो की शाखाओं में जैतावत राठौडो का मारवाड़ के इतिहास में अभूतपूर्व योगदान रहा है। जोधपुर राज्य के संस्थापक राव जोधाजी के अग्रज अखेराजजी ने अपने अंगूठे से तलवार को चिरक अपने रूधिर से जोधाजी का राजतिलक किया। यह एक महान त्याग था। अखेराजजी ने त्याग की भावना से पथक बगड़ी ठिकाना स्थापित किया। तब से मारवाड़ में जोधपुर महाराजा के राज्याभिषेक के समय बगड़ी के ठाकुर द्वारा राजतिलक करने की परम्परा रही है। बगड़ी ठिकाना मारवाड़ का टीकायत ठिकाना कहलाने के कारण मारवाड़ के उमराव में इनका वि"ाष्ट स्थान है। अखेराज जी के पौत्र जैताजी से जैतावत राठौडो का प्रादुर्भाव हुआ। जैताजी ने मारवाड़ के शासक मालदेव के समय 1544 ई. में गिर्री सुमेल के युद्ध का नेतृत्व किया और अपने योद्धाओं के साथ उन्होने प्राणेत्सर्ग कर कर्तव्यपरायणता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। जैतावत राठौड़ो ने मारवाड़ राज्य की ओर से लडी जाने वाली अनेक लडाईयों में भाग लेकर न सिर्फ स्वामी धर्म का निर्वाह किया बल्कि प्राणोत्सर्ग कर अपने कुल को गौरवान्वित किया। मुख्य रूप से जैतावत राठौडो द्वारा गिरी –सुमेल का युद्ध, धरमत का युद्ध, अहमदाबाद की लडाई, मेडता का युद्ध, दक्षिण के सैनिक अभिमान, सिसरोधी की लडाई, प्रथम व द्वितीय वि"व युद्ध में, जोधपुर गढ के घेराव में अपनी सेवाएं अर्पित कर वीरता का परिचय दिया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ

1. ओझा, गौरी शंकर हीराचन्द, जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग–1, पृ. 1–2
2. गहलोत, जगदी"ा सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 4
3. भाटी, हुकम सिंह, जैतावत राठौड़ो का इतिहास, पृ. 7
4. भाटी, हुकम सिंह, जैतावत राठौड़ो का इतिहास, पृ. 3
5. भाटी, हुकम सिंह, राठौड़ो की ख्यात भाग–1, पृ. 8–12
6. शोधार्थी की शोध यात्रा, बीठू ग्राम, पाली देवल अभिलेख, 15 मई 2021
7. रेऊ, पं वि"वे"वरनाथ, मारवाड़ का इतिहास, भाग–2, पृ. 144–246
8. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग–2, पृ. 340
9. भाटी, हुकम सिंह, जैतावत राठौड़ो का इतिहास, पृ. 27
10. गुगल मैप
11. शेखावत, भगवान सिंह, मारवाड़ के ठिकानों का इतिहास, पृ. 60
12. नगर, महेन्द्र सिंह, मारवाड़ के राजव"ा की सांस्कृतिक परम्पराएं, पृ. 178
13. भाटी, हुकुम सिंह, जैतावत राठौड़ो का इतिहास, पृ. 37
14. File No. 3/13 Vol. I year 1934, Bagri Thikana in case of higher kurab and Tajim, Page no. 1 to 65, बीकानेर अभिलेखागार कार्यालय
15. नगर महेन्द्र सिंह, मारवाड़ के राजव"ा की सांस्कृतिक परम्पराएं, पृ. 164–165
16. उदयभाण ख्यात, भाग–2 प. 24, राठौड़ो की ख्यात , भाग–1, पृ. 135
17. उदयभाण ख्यात भाग–2 पृ. 29, राठौडो की ख्यात, भाग–1 पृ. 172–13
18. भाटी, हुकम सिंह, जैतावत राठौड़ो का इतिहास पृ. 151–157
19. महाराजा अजीत सिंह, पट्टा बही, पट्टा संख्या 597
20. भाटी, हुकम सिंह, जैतावत राठौड़ो का इतिहास पृ. 165
21. उदयभाण ख्यात, भाग–2, पृ. 28
22. जोधपुर हुकूमत री बही, पट्टा री विगत'', पृ. 191
23. महाराजा अजीत सिंह पट्टा वही, सं. 597

24. महाराजा अभय सिंह, पट्टा बही, पृ. 323
25. रेउ, प. वि"वे"वरनाथ, मारवाड़ परगना री फरसत, पृ. 173, मारवाड़ का इतिहास, भाग–2 पृ. 671
26. हुकमनामा री बही, सं. 1837, 2544, पृ. 75
27. तवारीख जागीदार राज मारवाड़ 1893 ई. पृ. 94
28. गुगल मानचित्र की सहायता से
29. महाराजा अजीत सिंह पट्टा वहीं, पृ. 594 595, 587
30. महाराजा अजीत सिंह, पट्टा वही, 587
31. खांपवार पट्टाबही, जैतावत पट्टेदार पट्टा संख्या 70
32. वही, पट्टा संख्या 72
33. सनद, सोजत कचेडी, पट्टाबही, नं. 17 पृ. 734